Total No. of Questions - 3] [Total Pages : 3

(2022)

9254

M.A. Examination

HINDI

(भक्ति एवं रीतिकाव्य)

Paper–V

(Semester–II)

Time : Three Hours] [Max. Marks : Regular : 80 / Private. : 100

परीक्षार्थी अपने उत्तरों को दी गयी उत्तर-पुस्तिका (40 पृष्ठ) तक ही सीमित रखें। कोई अतिरिक्त पृष्ठ जारी नहीं किया जाएगा।

नोट : प्राइवेट विद्यार्थियों के लिए अंक कोष्ठकों में लिखे गए हैं।

1. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) चकई बिछुरि पुकारै, कहाँ मिलौं, हो नाहँ।

एक चाँद निसि सरग महँ, दिन दूसर जल माहँ।

अथवा

का तुम हँसहु गरब कै, करहु समुद महँ केलि।

मति ओहि बिरहा बस परे, दहै अगिनि जो मेलि।।

(ख) तब तो छबि पीवत जीवत है, अब सोचन लोचन जात जरे।

हित पोष के तोष सु प्रान पले, बिललात महा दुख दोष भरे।

घनआँनद मीत सुजान बिना सबही सुख साज समाज टरे।

तब हार पहार से लागत हे अब जानि के बीच पहार परे।।

अथवा

भोर ते साँझ लौं कानन ओर निहारति बावरी नेकु न हारति।

साँझ ते भोर लौं तारनि ताकिबो तारनिसों इकतारन टारति।

जौं कहूँ भावतो दीठि परै घनआँनद आँसुनि औसर गारति।

मोहन-सोहन-जोहन की लगियै रहै आँखिन के उर आरति।।

(ग) तो पर वारौं उरबसी, सुनि, राधिके सुजान।

तू मोहन कैं उर बसी, ह्वै उर बसी समान।।

अथवा

स्वारथु, कुकृतु न, श्रमु बृथा, देखि बिहंग बिचारि।

बाज, पराएँ पानि परि तूँ पच्छीनु न मारि।। 8×3=24

(10×3=30)

2. निम्नलिखित आलोचनात्मक प्रश्नों में से किन्हीं **तीन** के उत्तर विस्तार में दीजिए :

(क) महाकाव्य की दृष्टि से 'पद्मावत' की समीक्षा कीजिए।

(ख) जायसी के काव्य-सौष्ठव पर सोदाहरण प्रकाश डालिए।

(ग) घनानंद के काव्य में स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियों की विवेचना कीजिए।

(घ) रीतिकाव्य-परंपरा में घनानंद के महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

(ङ) 'बिहारी रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि हैं।' सोदाहरण प्रमाणित कीजिए। 17×3=51

(20×3=60)

3. निम्नलिखित अति लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर अति संक्षेप में दीजिए :

(क) 'मसनवी' शैली क्या है?

(ख) 'मानुस प्रेम भयउ बैकुँठी, नाहिं त काह छार एक मूठी' का आशय स्पष्ट कीजिए।

(ग) कविवर बिहारी का एक नीति परक दोहा लिखिए।

(घ) 'बिहारी सतसई' किस भाषा में रचित है?

(ङ) रीतिकाल में 'प्रेम का पीर का कवि' किसे कहा गया है?

1×5=5

(2×5=10)